जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 339 प्रभात कोटा, बुधवार 21 सितम्बर, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

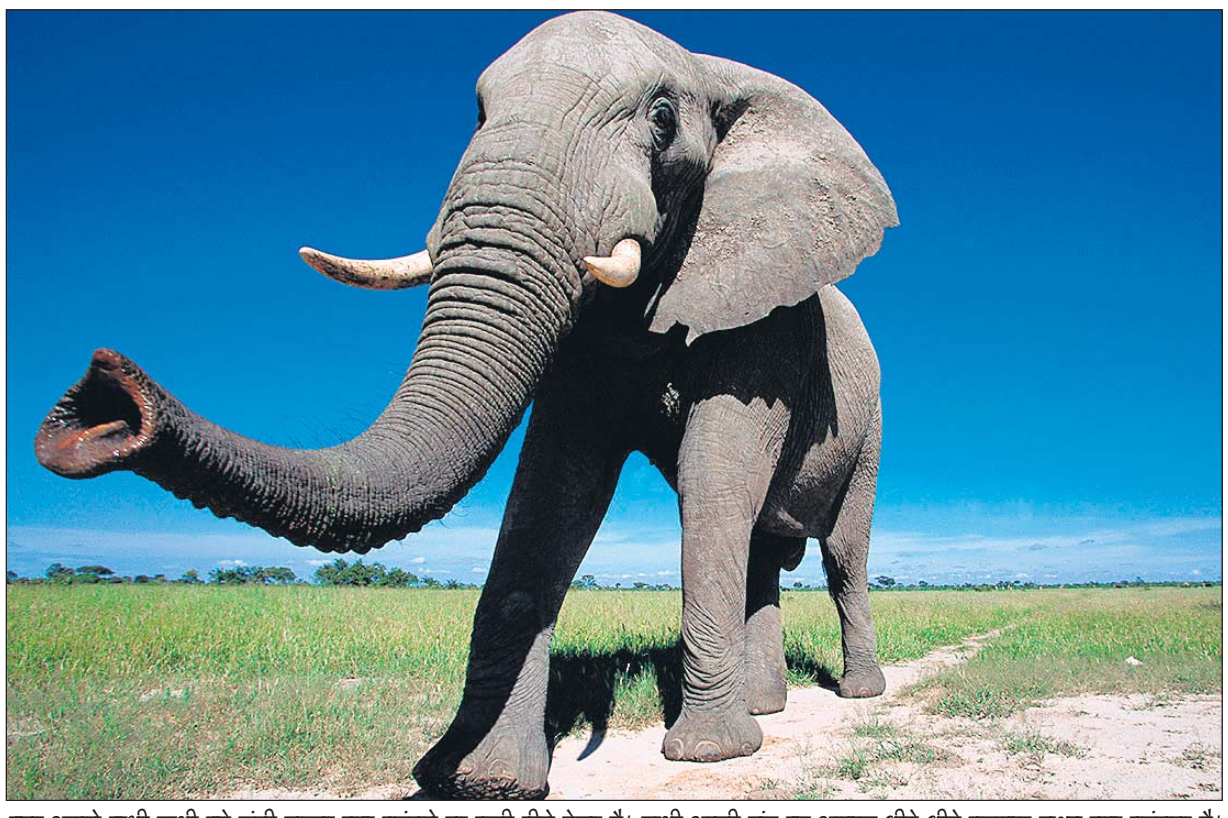

क्या आपने कभी हाथी को ऊंची शाखा तक पहुंचते या पानी पीते देखा है। हाथी अपनी सूंड का आकार धीरे-धीरे बढ़ाकर लक्ष्य तक पहुंचता है। लेकिन यह विशालकाय जानवर इस गतिविधि में केवल अपनी मसल्स का ही इस्तेमाल नहीं करता। एक नए शोध से पता चला है कि सूंड के ऊपर जो त्वचा होती है उसमें इस स्ट्रैचिंग का रहस्य निहित है। जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नॉलजी के शोधकर्ताओं ने ज़ू एटलांटा के साथ मिलकर अध्ययन किया कि, किस प्रकार त्वचा और मांसपेशियां मिल जुलकर काम करती हैं, जिससे हाथी की सूंड बहुत ऊंचाई पर लगी पत्तियों तक पहुँच जाती है। शोधकर्ताओं का मत है कि, इस शोध की मदद से बेहतर रोबॉट डिजाइन करने में सहायता मिल सकती है। मुख्य शोधकर्ता रॉबर्ट शुल्ज़ ने कहा, ''हाथी की सूंड में कई तरह की मसल्स होती हैं जो एक साथ काम करती हैं और सूंड की झुर्रीदार त्वचा के साथ भी तालमेल रखती हैं। सूंड में असल में अलग मांसपेशियों का संग्रह होता है जिससे सूंड स्ट्रैच करती है मुड़ जाती व चीज़ें पकड़ती है और छोटी भी हो जाती है। इस सबमें सूंड की त्वचा की अहम भूमिका होती है जिसमें गहरी झुर्रियां होती हैं।'' शोध के लिए वैज्ञानिकों ने दो अफ्रीकन सवाना हाथियों की वीडियो फिल्म बनाई, जो ज़ू में सेब और चोकर के क्यूब्स तक पहुंचने का प्रयास कर रहे थे। शोधकर्ताओं ने विडियो में देखा कि स्ट्रैचिंग के समय सूंड कैसे काम करती है। शुल्ज़ ने कहा, हम उम्मीद कर रहे थे कि सूंड भी वैसे ही स्ट्रैच करती है जैसे अन्य मस्क्युलर अंग, जीभ और टैन्टेकल्स आदि करते हैं, लेकिन हमें एकदम अलग नज़ारा मिला। हाथी एकदम अलग तरह से स्ट्रैच करते हैं ऊपर से लेकर नीचे तक सूंड एक साथ स्ट्रैच करती है। सूंड का ऊपरी भाग निचले भाग की तुलना में ज्यादा फ्लैक्सिबल होता है और जब सूंड का दस प्रतिशत तक विस्तार हो जाता है तो पृष्ठ भाग साइड के भाग की तुलना में ज्यादा बढ़ने लगता है। हाथी पहले सूंड के सिरे की त्वचा को स्ट्रैच करता है फिर उसके अगले भाग को, इस प्रकार सूंड बढ़ती है। शुल्ज़ कहते हैं कि, हाथी आलसी होते हैं पर असलियत यह है कि, वो अपनी ऊर्जा को वेस्ट नहीं करते। इसलिए ''टेलिस्कोपिंग पोल'' की तरह सूंड को स्ट्रैच करते हैं। ये नतीजे जर्नल प्रोसीडिंग्स ऑफ नैशनल एकडमी ऑफ साईंसेज में छपे हैं। शोध कहता है कि हाथी की एनाटमी और बायोमैकैनिक्स का अध्ययन करके वो सॉफ्ट रोबॉटिक्स के डिजाइन में मदद कर सकते हैं।

मंगलवार की सुबह पायलट केरल रवाना हुए

बुधवार को गहलोत भी केरल पहुंचेंगे राहुल गांधी से मिलने

- **कांग्रेस के संगठन सचिव के.सी. वेणुगोपाल ने आज स्पष्ट किया कि, 30 सितम्बर तक राहुल गांधी दिल्ली नहीं आ रहे। जैसा कि विदित ही है, तीस सितम्बर को कांग्रेस अध्यक्ष पद पर चुनाव लड़ने के लिए पर्चा भरने की अंतिम तारीख है।**
- **मंगलवार को सुबह वेणुगोपाल को दिल्ली बुलाया गया था, सोनिया गांधी से मिलने के लिये तथा अध्यक्ष पद के चुनाव के बारे में पूरा मुद्दा समझने के लिये।**
- **मुलाकात के बाद वेणुगोपाल ने पुनः दोहराया कि, जो भी चुनाव लड़ना चाहते हैं, वे चुनाव लड़ने के लिये स्वतंत्र हैं तथा कोई भी अधिकृत (ऑफिशियल) उम्मीदवार नहीं होगा।**
- **ऐसा माना जा रहा है कि, गहलोत सोनिया गांधी से मिलेंगे तथा फिर राहुल गांधी से मिलने जायेंगे, राहुल गांधी को वे बताना चाहते हैं कि, राजस्थान के कांग्रेस पार्टी के विधायक राहुल को कांग्रेस अध्यक्ष बनाना चाहते हैं। शायद इसी मकसद से मु.मंत्री गहलोत ने मंगलवार की रात को दस बजे कांग्रेस के विधायकों की बैठक आहूत की है, अपने निवास पर।**

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। अशोक गहलोत बहुत परेशान है। वे जिधर भी देखते हैं, उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी ही दिखाई देती है, जिससे भावनात्मक रूप से, भौतिक रूप से, आध्यात्मिक रूप से और हां वित्तीय रूप से भी जुड़े हुये हैं।

'उदयपुर प्रस्ताव' कहता है- एक व्यक्ति-एक पद, लेकिन अशोक गहलोत यह दबाव बना रहे हैं कि वे कांग्रेस अध्यक्ष तो बन जाए लेकिन उनकी मुख्यमंत्री की कुर्सी बनी रहे और अगर उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़नी भी पड़े तो वे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर अपने किसी नजदीकी व्यक्ति को बैठे देखना चाहते हैं जिससे कि अप्रत्यक्ष रूप से उनका ही शासन चलता रहे। गहलोत ने वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर चर्चा करने के लिये, आज रात 10 बजे कांग्रेस विधायक दल की मीटिंग बुलाई है।

सचिन पायलट आज सुबह राहुल गांधी की ''भारत जोड़ो यात्रा'' में शामिल होने के लिये केरल रवाना हो गये हैं। अशोक गहलोत, किसी भी तरह पीछे न रहते हुये, कल केरल जा रहे हैं, जहाँ वे यात्रा में शामिल होंगे, राहुल गांधी से मिलेंगे तथा उन्हें बतायेंगे कि मीटिंग में शामिल विधायकों की इच्छा है कि वे (राहुल) कांग्रेस अध्यक्ष बनें।

ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा संगठन प्रभारी के.सी. वेणुगोपाल आज केरल से वापस बुला लिये गये। वे सोनिया गांधी से मिले तथा उन दोनों के बीच अध्यक्ष के चुनाव के समग्र मुद्दे पर चर्चा हुई। वेणुगोपाल ने कहा कि जो लोग चुनाव लड़ना चाहते हैं, वे इसके लिये स्वतंत्र हैं तथा अधिकृत उम्मीदवार कोई भी नहीं है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राहुल गांधी 30 सितम्बर, जो नामांकन पेश करने की अंतिम तिथि है, तक दिल्ली नहीं आयेंगे।

आशा की जाती है कि अशोक गहलोत सोनिया गांधी से तथा उनके बाद राहुल गांधी से भेंट करेंगे तथा सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनने से रोकने का अंतिम प्रयास करेंगे।

एक राजनैतिक विशेषक ने टिप्पणी की है: अगर गांधी परिवार सचिन पायलट को मुख्यमंत्री नहीं बनाता, तो वह राजस्थान में क्या मुँह दिखायेगा?

अब प्रश्न यह नहीं है कि कांग्रेस अध्यक्ष कौन बनेगा, बल्कि प्रश्न यह है कि अशोक गहलोत सचिन पायलट को राजस्थान का मुख्यमंत्री बनने से कैसे रोकेंगे।

26 को पर्चा भरेंगे गहलोत?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। कांग्रेस में इसके नए अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरु हो गई है। नामांकन पत्र भरने की प्रक्रिया शुरु होने से चार दिन पहले स्टेट रिटर्निंग अधिकारियों ने निर्वाचकों की सूची जारी की। गौरतलब है कि 24 से 30 सितम्बर तक नामांकन भरे जाएंगे।

चूंकि प्रत्याशी को नामांकन भरने के लिए कम से कम दस निर्वाचकों के हस्ताक्षर चाहिए, इसलिए उन्हें निर्वाचकों की सूची की जरुरत होगी। निर्वाचकों की लिस्ट गोपनीय रखे जाने पर काफी खलबली मची हुई थी और मधुसूदन मिस्त्री ने 15 सितम्बर को कहा था कि स्टेट रिटर्निंग अधिकारियों को लिस्ट दे दी गई है, जिसे वे 20 सितम्बर को जारी करेंगे। लिस्ट में 9000

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए चुनाव प्रक्रिया शुरू हो गई है, निर्वाचकों की सूची जारी कर दी गई है तथा 24 से 30 सितम्बर तक नामांकन भरे जाएंगे, संकेत हैं कि अशोक गहलोत 26 सितम्बर तक पर्चा भर सकते हैं।**

पश्चिमी देशों में एक सप्ताह बाद भी मोदी-पुतिन इन्टरव्यू की चर्चा जोरों पर है

मीडिया बार-बार इस इन्टरव्यू की क्लिप्स टी.वी. पर दिखा रहा है तथा अखबार प्रमुख स्थान दे रहे हैं

- **वो मीडिया हाउस, जो प्रायः भारत विरोधी सा रूख रखते हैं, भी इस भेड़ चाल में शामिल होकर, भारत व रूस इन्टरव्यू को भारी महत्व दे रहे हैं।**
- **रूस भी कुछ अचम्भित सा दिखा, मोदी की टिप्पणियों से। तथा पुतिन ने बड़ा संयम बरतते हुए, तटस्थ सिद्धांत की बात करते हुए विवाद को टाला।**
- **पर, क्या रूस मोदी की इस सार्वजनिक घुड़की को आसानी से भूल जायेगा या सही समय का इंतजार करके, अपनी नाराजगी व तिरस्कार का बदला लेगा?**

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ का टेलीविजन साक्षात्कार कार्यक्रम प्रसारित होने के एक हफ्ते बाद भी पश्चिमी देशों के अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में गूंज रहा है। सभी मीडिया घराने इन दोनों के बीच के वार्तालाप की रिकॉर्डेड क्लिप को बार-बार दिखा रहे हैं। कुछ तो मीटिंग में मौजूद इन दोनों नेताओं की बॉडी लैंग्वेज़ का भी विश्लेषण कर रहे हैं। जहां रूस के नेता में एक महाशक्ति के पूर्व के दंभ का निश्चित रूप से अभाव है, वहीं मोदी को आत्म विश्वास से लबरेज बताया जा रहा है।

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की यूक्रेन नीति को लेकर किसी भी अन्य नेता ने इतनी कड़ी आलोचना नहीं की होगी। ऐसा लगा जैसे कि पुतिन के अधीन का रूस युद्ध और भिड़न्त के एक प्राचीन युग में रह रहा है। मोदी के बयान ने रूस को विस्मित कर दिया है।

इसके साथ ही मोदी का बयान चीन के राष्ट्रपति शी ज़िनपिंग पर करारा प्रहार भी है, जो हर तरफ आक्रामकता और विवाद की भाषा से काम ले रहे हैं। दक्षिणी हिंद सरकार से लेकर ताईवान और हिमालयी सीमा तक शी सभी तरफ विवाद को जन्म दे रहे हैं।

महत्वपूर्ण यह है कि भारतीय पक्ष के हिसाब से बयान अधिक संयमित है क्योंकि रूस की दुर्गति का समाधान करने के साथ ही कूटनीतिक अनिवार्यताएं भी रहीं। वास्तव में समरकंद कॉनक्लेव में हालांकि मोदी और शी एक ही मंच पर मौजूद थे, लेकिन बताया जाता है कि उन्होंने ना तो एक दूसरे का अभिवादन किया और ना ही हाथ मिलाए।

इस बयान के परिणामस्वरूप भारत को वो अटैन्शन मिल रहा है जो पहले मिलना चाहिए था। शी ज़िनपिंग और पुतिन, दोनों को अपेक्षाकृत निम्न स्तर पर तवज्जो मिली। पश्चिमी देशों के कुछ सर्वाधिक सशक्त मीडिया घराने जिनका रूख प्रायः भारत विरोधी रहा है, भी भेड़चाल में शामिल हैं और कवरेज दे रहे हैं।

पश्चिमी कूटनीतिक संस्थाओं का जहां से उम्मीद नहीं थी वहां से इन्हें मजबूत समर्थन मिला है। भारत को रूस का मजबूत समर्थक माना जाता था खासकर दोनों देशों के बीच के लेन-देन को देख कर। लेकिन यह भी देखना होगा रूस के कूटनीतिक हलकों पर इसका

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोहन भागवत का मुस्लिम बुद्धिजीवियों से लम्बा संवाद

पूर्व ले. गवर्नर नजीब जंग, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एस. वाय. कुरैशी, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के पूर्व उप कुलपति व आर. एल.डी. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, शाहिद सिद्दीकी संवाद में शामिल हुए

- **पिछले कुछ समय से संघ प्रमुख मुस्लिम समुदाय की तरफ मित्रता व सहयोग की बात आगे बढ़ा रहे हैं।**

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। आज आर.एस.एस. सरसंघचालक मोहन भागवत की मुस्लिम बुद्धिजीवियों के एक ग्रुप के साथ हुई मीटिंग गंभीर उत्सुकता तथा बहस का विषय बनी रही। यह मीटिंग झन्डेवालान में स्थित आर.एस.एस. के दिल्ली मुख्यालय ''केशव कुंज'' में हुई। मीटिंग में शामिल लोग थे- दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल नजीब जंग, पूर्व सी.ई.सी.एस.वाई कुरेशी, ए.एम.यू.के. पूर्व उपकूलपति जनरल जमीरुद्दीन शाह तथा आर.एल.डी. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शाहिद सिद्दी की।

आर.एस.एस. और भाजपा इस दिशा में संयुक्त रुप से प्रयासरत हैं कि पूरे देश में अपनी मजबूत राजनैतिक जड़े जमाने की रणनीति को आगे बढ़ाते हुये मुस्लिम मतदाताओं के ''पसमन्दा'' वर्ग को अपनी ओर आकर्षित किया जाये। एक वरिष्ठ पार्टी नेता ने कहा, ''सबसे पहले हिन्दू'' की रणनीति का राजनैतिक लाभ मिल चुका है, लेकिन भाजपा अखिल भारतीय स्तर पर कांग्रेस की वास्तविक स्थानापन्न के रुप में स्वयं को तभी स्थापित कर सकती है, जब वह मुस्लिम सहित, विभिन्न अल्पसंख्यक समुदायों को अपने साथ ला सके।

भागवत स्वयं समय-समय पर मुस्लिम समुदाय के समक्ष शांति एवं संधि प्रस्ताव प्रस्तुत करते रहे हैं। जब हिन्दू ग्रुप वाराणसी की ज्ञानवापी मस्जिद में ''शिवलिंग'' की खोज का दावा कर रहे थे, तो भागवत ने टिप्पणी की थी: ''प्रत्येक मस्जिद में किसी शिवलिंग की खोज क्यों?'' पिछले वर्ष सितम्बर में, भागवत ने कहा था कि हिन्दुओं और मुस्लिमों के पूर्वज एक ही थे तथा ''हमारा अतीत हमारी एकता का आधार था।'' इस वर्ष जून में, भागवत ने उस समय मुस्लिम सम्पत्तियों से जुड़े विवादों तथा मुकदमेबाजी पर ही तो टिप्पणी की थी, जब उन्होंने ''आपसी सहमति के रास्ते'' की जरुरत बताई थी। सितम्बर 2018 में, आर.एस.एस. सरसंघचालक ने कहा था कि ''मुस्लिमों को शामिल किये बिना, हिन्दुत्व को हिन्दुत्व नहीं कहा जा सकता।'' गत वर्ष सितम्बर में ही, आर.एस.एस. प्रमुख ने मुम्बई में मुस्लिम बुद्धिजीवियों के एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यू.एन. जनरल असैम्बली

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संयुक्त राष्ट्र महासभा के 77वें सत्र में भाग नहीं लेंगे। यह विश्व के नेताओं का सबसे बड़ा सम्मेलन है जो न्यूयॉर्क सिटी में 19 सितम्बर को शुरू हुआ है। इसकी बजाय उन्होंने विदेशी मामलात मंत्री एस. जयशंकर को भेजा है।

- **करोना महामारी की वजह से तीन साल बाद हो रही यू.एन. जनरल असैम्बली में प्रधानमंत्री मोदी शामिल नहीं होंगे, उनकी जगह विदेश मंत्री एस. जयशंकर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।**

करोना महामारी की वजह से तीन साल में पहली बार जनरल असैम्बली की मीटिंग हो रही है। इसमें काफी विषाद

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'हिजाब कुछ मासूम छात्राओं की अनायास उठी मांग नहीं है'

सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट में कहा, हिजाब का मुद्दा गैर कानूनी संगठन पी.एफ.आई. की साजिश का नतीजा है

- **सॉलिसिटर जनरल ने कर्नाटक सरकार की ओर से पैरवी करते हुए यह भी कहा कि, स्कूल/कॉलेज में युनिफॉर्म ही पहनने के बारे में पारित आदेश केवल हिजाब के लिये ही नहीं हैं, बल्कि सभी धर्मों के लिये हैं, जैसे, इसी आदेश के तहत भगवा शॉल पहन के स्कूल/कॉलेज आना भी वर्जित किया गया है।**
- **सॉलिसिटर जनरल ने यह भी कहा कि, कर्नाटक सरकार के आदेश में छात्र-छात्राओं को वह ड्रेस पहनना वर्जित किया है, जिससे शिक्षण संस्थाओं में इक्वॉलिटी, इन्टेग्रिटी व कानून व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न होता है।**
- **दूसरी तरफ से बहस करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता दुष्यन्त दवे ने कहा कि, हिजाब को प्रतिबंधित करके, कर्नाटक सरकार, मुसलमानों को अलग-थलग करने का प्रयास कर रही है। दवे ने यह भी कहा कि, हिजाब पहन कर मुस्लिम महिलाएं किसी की भावना को ठेस नहीं पहुंचा रहीं। दवे ने यह भी सवाल उठाया कि, ''हिजाब पहनने से कैसे देश की अखण्डता व एकता को खतरा पहुंचता है।''**

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। सॉलिसिटर जनरल (एस.जी.) तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि हिजाब विवाद एकाएक उठा विवाद नहीं है, बल्कि प्रतिबंधित संगठन पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पी.एफ.आई.) के एक बड़े षडयंत्र का हिस्सा है जिसने सोशल मीडिया पर ''हिजाब पहनना शुरु करो'' मुहिम शुरु की थी। तुषार मेहता इस केस में कर्नाटक सरकार की तरफ से पैरवी कर रहे है।

जस्टिस हेमंत गुप्ता व सुधांशु धूलिया की बैंच कर्नाटक के शिक्षण संस्थानों में हिजाब पहनने पर लगे प्रतिबंध को चुनौती देने वाली याचिकाओं की सुनवाई कर रही है।

तुषार मेहता ने दो बातों पर ध्यान खींचा कि वर्ष 2021 से पहले कोई भी लड़की हिजाब नहीं पहन रही थी और ना ही कभी यह सवाल उठा था। यह कहना गलत होगा कि सरकार ने सिर्फ हिजाब बैन किया दूसरे समुदाय के लोगों को भी भगवा गमछा पहनने से रोका है।

उन्होंने कहा कि, इसमें एक और पक्ष है। मैं इसे बढ़ा चढ़ाकर नहीं कह रहा हूँ। लेकिन अगर सरकार ने इस तरह से कदम नहीं उठाया होता तो सरकार पर संवैधानिक कर्तव्य नहीं निभाने का आरोप लगता। उन्होंने इस प्रकार कर्नाटक सरकार के 5 फरवरी 2022 को जारी आदेश को सही ठहराया जिसमें ऐसे कपड़े पहने पर रोक लगाई थी जो स्कूल कॉलेजों में समानता, एकता और व्यवस्था को बाधित करते है। कर्नाटक हाईकोर्ट ने भी 15 मार्च को कहा था कि हिजाब उस धार्मिक प्रक्रिया का अंग नहीं है जिसे संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत संरक्षित किया जाए।

सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि 29 मार्च 2013 को उडुपी पी.यू.सी. (प्री युनिवर्सिटी गर्ल्स कॉलेज) द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया कि जिसमें लड़कियों के लिए यूनीफॉर्म बताई गई थीं और छात्राएं वही पहन रही थी, जिसमें हिजाब शामिल नहीं था।'' बाद में वर्ष 2014 में अन्य पी.यू.सी. के सी.डी.सी ने भी सर्वसम्मति से उसी यूनीफॉर्म को अपना लिया।

तुषार मेहता ने कहा कि वर्ष 2022 में पी.एफ.आई ने सोशल मीडिया पर एक अभियान शुरु किया। बार-बार मैसेज दिए गए कि, ''हिजाब पहनना शुरु किया जाए''। यह कुछ बालिकाओं का अनायास उठाया गया कदम नहीं था। यह वृहद षडयंत्र का हिस्सा था और वे वही कर रहीं थीं, जो उनसे करने के लिए कहा जा रहा था।''

वरिष्ठ अधिवक्ता दुष्यंत दवे ने हिजाब को मुसलमानों की पहचान बताते हुए सोमवार को कहा था कि कर्नाटक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कोविड का अंत?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 सितम्बर। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत में कोविड-19 बीमारी का खात्मा होने के कगार पर है क्योंकि दैनिक इन्फैक्शन्स की संख्या मंगलवार को कम होकर 4 हजार 43 पर आ गई और एक्टिव केसेज़ भी कम होकर 47 हजार 379 रह गए, लेकिन पिछले 24 घंटों में इस बीमारी से देश में 15 मौतें हुई हैं।

- **स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़े तो यही दर्शा रहे हैं कि, भारत में कोविड-19 का खात्मा हो रहा है, हर गुजरते दिन के साथ नए मरीजों की संख्या व एक्टिव केस के आंकड़े घट रहे हैं।**

केरल में पिछले कुछ दिनों में इससे कुल छह मौतें हुईं, जबकि बीते 24 घंटों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)